भजनावली ॥

श्रीविष्णुप्रसाद वकीलके पुत्र ज़िला गयाजी
स्थानटिकारीनिवासी हालवासी स्थान हज़ारी-
बाग़ महल्ले बड़ाबाज़ार ज़िला हज़ारीबाग़
विद्वज्जनतमोपह परमभक्त मुंशी जगन्नाथ-
सहाय ज़मींदार विरचित

जिसमें

शिवविवाह, आरती, प्रभाती, भजन, होली, चैत, गीतगोविन्द,
बारहमासा, ठुमरी आदि अतिउत्तम सरल छन्दों और
रागों में भक्तजनों के आनन्द के निमित्त वर्णित हैं ॥

ग्रन्थकर्ता से शोधितहोकर

सातवीं बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेख़ाने में छपी
सन् १८९१ ई० ॥

भजनावली का सूचीपत्र ॥

नाम		संख्या	पृष्ठ
दोहा ग्रन्थारम्भ के	....	८	१
वन्दना दशावतारकी	....	१	२
शिवजीका विवाह	....	१	३
आरती	....	१०	८
प्रातकाली	....	४	१५
भजन गुरूनानक	....	१	१८
भजन ठाकुरद्वारा	....	१	१९
भजन शिवजीके	....	३	२०
भजन दशावतारका	....	१	२३
रामावतार के भजन	....	६	२५
हनुमान्जी के भजन	....	२	३४
कृष्णावतार के भजनलीला के		९	३६

नाम		संख्या	पृष्ठ
विनय आदि	....	७	४४
होली	....	१०	४६
चैत	....	३	५७
बारहमासा	....	४	५६
तिल्लाना	....	१	६६
कजरी	....	१	६६
गीतगोविन्द	....	२	६७
ठुमरी खेमटा टप्पा दोहा	....	१३	७०
मुंशी नवलकिशोर साहिबकी प्रशंसा और संवत् समास ग्रन्थ	....	२	७६

जमा ६०



अथ भजनावली ॥

दोहा ॥

बन्दि के चरण गणेश के अरु सब देव मनाय। गावै अनुपम हरिभजन जगन्नाथ मन लाय ॥ १ ॥ जगन्नाथ बहु पद्दन में होत गान में भङ्ग । ताते जन जग्रनाथ अस बहुपद लिख्यो अभङ्ग ॥ २ ॥ हौं सुत विष्णुप्रसाद को अहै टिकारी धाम । रहौं हजारीबाग में जन्मभूमि यह ठाम॥३॥

॥ सूरदासवचन ॥

वृन्दावन से बन नहीं नन्दग्राम से ग्राम।

बंशीबट से बट नहीं कृष्ण नाम से नाम॥४॥

॥ तुलसीदासवचन ॥

कलियुग सम नहिं आन युग जो नर कर बिश्वास। गाइ राम गुणगण बिमल भव तर बिनहिं प्रयास॥ ५॥ श्रवण घटहु पुनि दृगघटहु घटो सकल बलदेह। इते घटे घटिहै कहा जो न घटे हरिनेह॥ ६॥

॥ जगन्नाथकृत ॥

अस उर में बिश्वास करि सुमिरि चरण भगवान। गावहिं जो नर हरिभजन होत सदा कल्यान॥७॥ भजनारम्भ अब होत है सुनिये कुँवर कन्हाइ। राधादिक गोपिन सहित आसन लेहु सुहाइ॥ ८॥

अथ बन्दना दशावतारकी॥

चौ० ॥ बन्दौं प्रथम मीन अवतारा।

पुनि कच्छप जिन मन्दरधारा ॥ बन्दौं पुनि बाराह स्वरूपा । अरु नरसिंह जगत सुर भूपा ॥ प्रणवौं बामनबेष मुरारी । परशुराम सन्तन हितकारी ॥ प्रणवौं रामचन्द्र अवतारा । लङ्का में जिन रावण मारा ॥ प्रणवौं कृष्णचन्द्र गिरिधारी । बौधरूप भक्तन हितकारी ॥

दो० ॥ अब अकलंकी रूपको जो होइहि कलि अन्त । जगन्नाथ बन्दन करत करहु कृपा भगवन्त ॥

अथ शिवजी का बिवाह बर्णन ॥

दो० ॥ बन्दौं श्रीगिरिजारमण कृपा सिन्धु गुणखान । करहु कृपा जेहि करउँ तुम ब्याह चरित्र बखान ॥

चौ० ॥ श्रीगौरी हिमगिरिकी कन्या ।

मयना तासु मातु सो धन्या ॥ उमाकीन्ह तप शिवपतिपावन । लेइ परीक्षा हर हर्षे मन ॥ पठये सप्तऋषिन्ह गिरिके घर । अरु ऋषि संगिनि रुन्धति कहिकर ॥ मोते करहु उमाकर ब्याहा । जाइकहा सब शिवहिं सराहा ॥ कह गिरि करब विवाह ऋषीशा । कहाआय सब जहां सतीशा ॥ होन लगा दुहुँदिशि ब्यवहारा । चली महेश बरात अपारा ॥ विबुध बृन्द सब चले बराता । ब्रह्मा बिष्णु सकल सुखदाता ॥ ऋषि गन्धर्ब अप्सराराजैं । बहुबिधि तहां बाजनेबाजैं ॥ भूत पिशाच असुरगण जेते । शिवसँग चले बरातहिं तेते ॥ चले बसह चढ़ि शम्भुदयाला । तनु बिभूति गल ब्यालकराला ॥ शीश गंग अयनयन

बिराजैं। कर त्रिशूल अति डमरू बाजैं॥ जटामुकुट कटिमें मृगछाला। शशि ललाट मुण्डनकी माला॥

दो०॥ मयना देखत रूप अस अवनि गिरी पछितात। ह्वै सचेत कह हैं कहां रूं-धति अरु ऋषिसात॥

चौ०॥ मृषा कथन फल उनहिं चखाऊं। अब कैसे मैं धीरज पाऊं॥ कहत हिमाचल तासन या बिधि। प्रिया सोच जनि यही लिखा बिधि॥ गौरी जाइ कहा तब मातहिं। मानहु मातु पिता की बातहिं॥ सुनि अस माता उर रिसिआई। मारेउ गौरिहिं उठि तेहिठाँई॥ ब्रह्मा बिष्णु गये तिहिपाहीं। कहन लगे समुझाइके ताहीं॥ सुन मयना यह हर अविनाशी। हैं जग-

नायक मङ्गलराशी ॥ जो होते नहिं यह जगनाथा। हम सब क्यों होते इन साथा॥ श्रवण कीन्हि असि मीठी बानी। शान्त भई कछु तब गिरिरानी ॥ नारद गये शम्भु ढिग तबहीं। कहा बिलम्ब न लावहु अबहीं॥ बदलहु प्रभु निज वेष भयावन। बने शम्भु तब परम सुहावन ॥ पहिने अरुण बसन तन माहीं। शीश मुकुट छबि बरणि न जाहीं॥ चढ़े सलोनो हय पर नाथा। गौर बदन मुनिगण सब साथा॥

दो०॥ गङ्ग यमुन झालति चमर यह छबि मयना देखि। भई मुदित पूज्यो हरहिं मिटा बिषाद बिशेखि॥

चौ०॥ बैठारयो शिवको तेहि लाई। भाँवरि हेतु परम सचुपाई॥ पढ़त वेद

तहँ ऋषि मिलि सबहीं। पुष्पबृष्टि भइ नभते तबहीं॥ गौरीको माता तब ल्याई। ब्रह्मा बेदी आप बनाई॥ भा तब गिरिजा शम्भु बिवाहा। देखत लोगन्ह सहित उ-छाहा॥ जब भइ भांवरि रीति सुहाये। मुदित हिमाचल रत्न लुटाये॥ या बिधि कहत जोरि युग पानी। मैं तुम्हार सेवक शिवदानी॥ आवत चरण गरीबनेवाजा। भा गृह मोरगेह जिमिराजा॥ बिदा बरात भई तेहि अवसर। आये शिव कैलास बिहँसि कर॥ पुष्पबृष्टि नभ भइ तेहि ठामा। फिरे लोग करि शिवहिं प्रणामा॥ जपहु सदा मन नाम महेशा। जाते रहे न दुखलवलेशा॥ है यह शम्भुचरित्र उदा-रा। पढ़े सुने जोएकहुबारा॥ पावै धन सुत

रहे सुखारी । तापर रहैं प्रसन्न पुरारी ॥
दो० ॥ जगन्नाथ प्रभु कीन्हि तुव ब्याह कथा सम्पूर्ण । मोहुप होइ प्रसन्न शिव कीजै आशा पूर्ण ॥

अथ आरतीप्रारम्भ ॥

श्रीरामावतारकी आरती ॥ रागगौरी ॥ आरति रामचन्द्रकी किजे । जनकसुता के पद चित दीजे ॥ टेक ॥ शीशमुकुट कर धनुष सुहाई । श्यामगौर शोभा अधिकाई १ भरत लषण रिपुहन सब भ्राता । हनुमत सेवक जग विख्याता ॥ ठाढ़े निकट जहां सिंहासन । राजत सिया संग दुखनाशन २ नाम जपत भवसिन्धु सुखाई । जगन्नाथ धनि जिन लौलाई ३ । १ ॥ श्रीकृष्णावतारकी आरती ॥ आरति राधा कृष्णाहिं कीजे । युगल

कमल चरणोदक लीजे ॥ टेक ॥ शीश फूल बेंदी अति शोभे। मोरमुकुट चन्दन मन लोभे १ दृग अंजन नकबेसर राजे। कर्णफूल कुण्डल अतिभ्राजे २ मुख आभा निरखत शशिलाजे। उर मोतिन की माल बिराजे ३ बाजुबन्द कंगन करसोहै। मुरली शब्द सुनत मनमोहै ४ नीलाम्बर पीताम्बर छाजे। कटि किंकिणि पग नूपुर बाजे ५ शोभित रत्न जड़ित सिंहासन। श्रीबृषभानुलली नँदनन्दन ६ श्यामकृष्ण गोरी श्रीराधा। रूपराशि हरि प्रेम अगाधा ७ बसहु सदा मम उर दोउ जोरी। जगन्नाथ जन कह करजोरी ८। २॥ आरति साजि चलीं ब्रजनारी। गोपसुता बृषभानु दुलारी ॥ टेक ॥ मोहन गो गोहन

गृह आये । धूरि पूरि तनु अधिक सुहाये १ छबि अपार लखि मार लजाई । कर वंशी धरि अधर बजाई २ तमअरि सुता देखि छबि पीकी । मेटति ताप सखिन सँग जीकी ३ बैठे रत्न सिंहासन जाई । आरति करति यशोमति माई ४ ब्रजललना सँग आरति गावें । शंखरु घंट मृदंग बजावें ५ ता छबिपर तनमन धन वारी । जन जग्न-नाथ जात बलिहारी ६ । ३ ॥

दो० ॥ श्री यमुना तट कदमतर बैठे गिरिवर धारि । राधा करति है आरती जगन्नाथ बलिहारि ॥

आरती राग ललित ॥ ऐसी मुरली श्याम बजाई । मोहि चलीं ब्रजबाला ॥ हरि हरि १ रास माहिं सखियन भईं ठाढ़ी । बिच बिच

मदनगुपाला ॥ हरि हरि २ आरति करिके हरि सँग नाचति । बाजत डफ करताल ॥ हरि हरि ३ सारंगी मिरदंग मंजीरा । किंकिरा शब्द रसाला । हरिहरि ४ जगन्नाथ मेरे उरमें बसो । भानुसुता नँदलाला ॥ हरिहरि ५ । ४ ॥

अथ युगलावतार की आरती ॥ राग गौरी ॥ आरति रामश्याम की गाऊं । सिया और राधा को मनाऊं ॥ ध्रु० ॥ राम पुत्र दशरथ के कहाये । श्याम नन्दसुत नामधराये १ रामसंग श्रीजनककुमारी । श्यामसंग बृषभानु दुलारी २ रामसंग कपिसेना छाजे । श्यामसंग ग्वालनदल राजे ३ रामके मन हनुमत अतिभाये । श्याम को मन ऊधो हुलसाये ४ जनजग्रनाथ उभय शिरनाई ।

राम श्याम की आरति गाई ५ । ५ ॥

आरती श्रीगंगाजी की ॥ आरति श्रीगंगामहरानी। कलिमल हरणि परमपद दानी ॥ टेक ॥ प्रभु पद धोवन बहि जब आई। आइ जटा शंकर में समाई १ जब शंकर निसरन नहिं दीन्हा। भागीरथ तब तप अति कीन्हा २ तब जग में गंगा बहि आई। सुर मुनि सन्तन की सुखदाई ३ जो जन तिहि महँ जाइ नहाये। बिनु सन्देह परमपद पाये ४ असि गंगापद ध्यान लगाई। जगन्नाथ जन आरति गाई ५ । ६ ॥

आरती श्रीशिवजी की ॥ आरति कीजे उमापति जीकी। मेटति जेहि आरत सबही की ॥ ध्रु० ॥ शिर सुरसरि शोभित शशिभाला। नीलकण्ठ गले मुंडनमाला १ करत्रिशूल ओढ़े बघछाला।

अंग भस्म गल लपटे ब्याला २ पार्व्वती सँगरह कैलासा। बाहन बसह बिराजत पासा ३ हर बम हर बम हरदम जापा। तुरत नशाति सकल मनतापा ४ जोनर शंभुकि आरतिगावे। जन जग्रनाथ सकल सुख पावे ५। ७॥ आरती श्रीहनुमान्‌जीकी ॥

आरति श्रीहनुमान गुसांई। रामदूत जिन लङ्कजराई॥ ध्रु० ॥ कनक बरण तन तेज बिराजे। हाथ गदा भूधर अतिराजे १ फांदि जलधि लंका में आये। सीता सुधि रघुपति पहँ लाये २ मूर्च्छा रामानुज की छुड़ाई। मारेउ महिरावण दुखदाई ३ जगन्नाथ चरणन लवलाई। संकटमें सोइ करहिं सहाई ४। ८॥ आरती श्रीदुर्गाजी की ॥

आरति श्रीदुर्गामहरानी। भयहरणी

सन्तन सुखदानी ॥ टेक ॥ दुष्टदलनि शंकर प्रिय रानी । त्रिभुवन स्वामिनि आदि भवानी १ रदन एक चख तीन बिराजैं । कानन में कुण्डल अति भ्राजैं २ शुम्भ निशुम्भ असुरसंहारिनि । महिषासुर मर्दनि अघहारिनि ३ करुणा करहु मातु बलि जाई । जगन्नाथ जन आरति गाई ४ । ६ ॥

दो० ॥ भक्तमाल सुखनिधि रची तुलसी राम सुजान । जगन्नाथ पढ़ि मुदित तिहि आरति कीन्हि बखान ॥

आरती श्रीभक्तमालकी ॥ रागगौरी ॥ आरति कीजे श्रीभक्तमालकी । कीरति भक्त औ भक्तपाल की ॥ टेक ॥ मन तम टारन मनहुँ प्रदीपन । प्रियमहि धनसम भक्त महीपन १ भक्त करनि बैकुण्ठ निसेनी । राम श्याम

प्रिय अति सुखदेनी २ कलिमलहरणि दानि सब काजा। भव वारिधि के तरन जहाजा ३ चतुर्विंश निष्ठा जो गावे। मति रति पाय अन्तगति पावे ४ वन्दि चरण भक्तन समुदाई। जगन्नाथ यह भक्ति कन्हाई ५। १०॥

अथ प्रातकाली॥

राग नटनारायण ×॥ रामका करु ध्यान प्यारे। रामकाकरु ध्यान॥टेक॥ शिर मुकुट कर धनुष राजे सिया लीन्हे साथ। अगुण ते भे सगुण तन धरि भक्तहित रघुनाथ १ बन में खरदूषण को मारउ हरीसिय दशमाथ। युद्धको लङ्का सिधारे लिये

× जवाब॥ रामनामावसी हमारे मन रामनामावसी॥ नगमयादवसी॥

शरधनुहाथ २ रावणहिं असकह मदोदरि कन्तसुनु ममबात। प्रीति करिलो राम से मिलि नहिं तुकरि हैं घात ३ सुनत रावण क्रोध कीन्हा हरिसे कियसंग्राम। जगन्नाथ सँहारि प्रभु तिहि फिरे ले सियबाम ४। १

किमिरहौं बिनुश्याम सखिरी किमिरहौं बिनु श्याम॥ टेक॥ जाइ हरि अटके हैं मथुरा गये हमहिं भुलाय। गोपिपतिह्वै गोपित्यागी सकल सुख बिसराय १ क्रूरसो अक्रूरलेगो हनेउ कंसहिं श्याम। राजमथुराको भयो अब रखी कुब्जाबाम २ कौन ब्रज सुधिलेत अबकह राधिका बिलखाय। करहु करुणा हरि कहत अब जगन्नाथ सहाय ३॥ २॥ राग भैरो॥ +रामकृष्णभज

+ शिवयोगीयशगायारे [illegible]

बौधरूप नरसिंह शम्भु अबिनाशी ॥ टेक॥
अवधपुरी में जन्म लियोहै कौशल्या महतारी। लक्ष्मण सिय संगलेय जाइबन हते निशाचर भारी १ देवकि गृह अवतार लेइके आरत सकल मिटाई। कंस मारि उग्रसेन भूप किय लीला अधिक बनाई २ जयहरि पुरुषोत्तम पुरबासी धन्य धन्य प्रभुताई। करिकरुणा दर्शन जेहि दीन्हा जन्म तासु फलदाई ३ खम्भफारि आये नरहरि प्रभु रति प्रह्लादहिं पाई। ताके पितुको उदर बिदारेउ भक्तप भये सहाई ४ मस्तक गंगबिभूति सोह तनु जयशंकर कैलाशी। जगन्नाथको दास जानिके करहु दया सुखराशी ५। ३ ॥ राग बिलावल ॥ *

---

* गाइये गणपति जगबन्दन ॥ बिनयपत्रिका ॥

जागिय ए महराज कृपागारा ॥ ग्वालबाल सब तुम्हरे दरशको । खड़ेहैं आइके तुम्हरेद्वारा ॥ टेक ॥ तुरत सुनत जागे मनमोहन ।जाइनिकटमाताकोपुकारा १ मांगि कलेउ चले बनमोहन । ग्वाल चले सँग लेइ अहारा २ कह जग्रनाथ जो दास तुम्हारा। तुमबिनु कौन मोररखवारा ३ । ४॥

अथ भजनारम्भ ॥

भजन गुरुनानकशाहका रागरामकली ॥ * श्री गुरू नानकके सुमिरनमें लीनरहो मन दमपर दम ॥ टेक ॥ जाके सुमिरत आरत भागति पावत सुखनहिं कमकमकम । ऐसे गुरूको सुमिरो तुम मन पूरे आस रहे

---

* रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर गावत सकल अवधबासी ॥ गीतावली ॥

नहिं गम १ आगम निगम सभे यह गावें गुरूको सुमिरो कटत अलम। रेमन मूरख तू नहिं सुमिरे छाँड़ि दिये अब एककलम २ जो नहिं राख प्रेम गुरुपदमें करन साधु सेवा हरदम। पारहोय किमि भवसागर वह समझत नाहिंन नेकु अधम ३ कर बिश्वास भक्तगुरू साधुन हैं रघुनाथके समसमसम। जगन्नाथ नानक गुणगावत आशरखत गुरुदेवकदम ४। १ ॥ भजन ठाकुरद्वारा ॥ रागगूजरी ॥ ‡ जयठाकुर पुरुषोत्तमपुरमें बिराजहीं। सबहिं परमपद दानि दानि सबकाजहीं ॥ टेक ॥ संतत तुम्हरी कृपा रहमेरे पर बनी। हमहीं पतितको न होय चरण में रतिघनी १ तव दर्शन

‡ कृष्णजन्म जब भयो है बधावा लचलो ॥ आनन्दसागर ॥

अभिलाष अधिक मैं राखऊं। करुणा करहु जेहिजाय दरश फल चाखऊं २ आपन बिरचित ग्रन्थ चरण पै चढ़ाऊं मैं। आपन रचित पवित्र भजन सब गाऊं मैं ३ जग्ननाथ प्रभुपद अनुराग बढ़ाऊं मैं। नाशहोय अघ जाल परमपद पाऊं मैं ४। १ ॥ शिवजी के भजन ॥ रागकान्हरा ॥ + बलि जाऊं तासुपद मैं कृपाला। जाको शोभेगले मुण्डमाला ॥ टेक ॥ माथेपै जाके गंगा बिराजें। अंग बिभूति लपट गले ब्याला १ जाके ललाट में चन्द्र बिराजें। नीलकण्ठ जेहिबाहु बिशाला २ पार्वती जाके रह सङ्ग साथे। हाथ त्रिशूल ओढ़े बघछाला ३ जन जग्ननाथ जो यह छबि ध्यावे। मेटत

पातक दुख जंजाला ४ । १ ॥ रागगौरी ॥ +
जप नाम शिवको सनेह मन जाते परम पद पावई ॥ टेक ॥ यक समय चित्रकेतु नृप कैलास पर्वत पर गयो । निज तियन को जहँ सङ्गलीन्हें शिवनिकट ठाढ़ो भयो १ तहँ गोदमें गौरीकोले शिवज्ञान सिखलावत रहे । नृप चित्रकेतु प्रणाम करि हँसिके लगाया बिधि कहे २ तपसी जगत गुरु ब्रह्मज्ञानी देवता शिव क्या भये । छांड़ि लाज समान निरलज गोद में स्त्री लिये ३ मन्द मन्द मुसकाइ के जब दीख शिव चित्रकेतु को । तबगौरि बोली क्रोध करि यह दुष्ट सिखलावन लगो ४ शाप

+ श्रीरामचन्द्र कृपाल भजुमन हरण भवभयदारुणं ॥

विनयपत्रिका ॥

दीन्हा क्रोध करिके बेगहीं चित्रकेतु को। जन्म ले शठ दैत्य योनि में नाम बृत्राश्र-सुर हो ५ गिरिजा दियो जब शाप तब तिहिजन्म निशिचर गृहभयो। अरु नाम बृत्रासुरभयो जब मरेउ तब सुरपुर गयो ६ यह चरित शुकदेव मुनि श्रीभागवत में गावहीं। जगन्नाथ जो गावयह भवजलधि तरि सुख पावहीं ७। २॥ रागरामकली ॥ ×

हरुशङ्कर सङ्कटमेरो ॥ ध्रु० ॥ जिनके माथे पै गङ्गा बिराजें। खात भांग धतूरा ढेरो १ जिनको शोभे गले मुण्डमाला। बाजे डमरू शब्द घनेरो २ जिनको बास कैलास में सोहे। रहें गिरिजा जिनके नेरो ३ सबके दुखभञ्जनहारे। उनको भजत छुटिहि दुख

× हरि होगये अन्तरधाना ॥ आनन्दसागर ॥

तेरो ४ हरिये जग्रनाथ के दुख को। हमहूं हैं तुम्हरे चेरो ५। ३॥ दशावतार को भजन॥ रागपरज॥ † भजु गोपाल गोबर्द्धनधारी॥ टेक॥ जन मन रञ्जन सब दुख भञ्जन भञ्जन आनँदकारी। लयकौतुक सतब्रतहि दिखायो मीनरूप प्रभुधारी॥ कच्छ होइ मन्द्राचल धारेउ मधुकैटभ संहारी। ऐसे रूप धरत जनतारन अलख पुरुष बनवारी १ जब ब्रह्मा प्रभु आयसु पाके रच्यो जगत बिस्तारी। हिरण्याक्ष धरती को उठाके गोपाताल मँझारी॥ करि बाराह रूप तब धारन गे पाताल मुरारी। हिरण्याक्ष को मारि गिरायो जलपर धरणि सँवारी २ जब प्रह्लाद को हरिके भजन में

† प्रभु जगपालन गिरिवरधारी॥ आनन्दसागर॥

हाटककशिपु निहारी । अतिक्रोधित ह्वै खड्ग हाथ लिय मारन हेतु सुरारी ॥ कहां राम अरु कहां श्याम हैं कर जेहि भजन सुखारी । नृसिंह रूप धरि आये तब प्रभू दीन्हो उदर बिदारी ३ बामन रूप धरा जब प्रभुजी बलि द्वारे पग धारी । तीन डेग पृथ्वी प्रभु यांची सन्तन के हितकारी ॥ शुक्राचार्य कहा राजासे दान न देव भिखारी । गन्धि होय झारी में समायो अन्ध कियो सो झारी ४ अमित अधर्म किये जब जग में असुरन मुनि दुखकारी । परशुराम रूप करि धारन आये गर्बप्रहारी ॥ सब क्षत्रिन को नाश कियो है दुष्टन को संहारी । राज दीन बिप्रनहिं दियो प्रभु धर्म्म कियो बिस्तारी ५ रामस्वरूप होइ जब

प्रभुजी लीन्ह अवध अवतारी । रावण हरि सीता को लैगो लङ्का गये खरारी ॥ संग हनुमान् चले तहँ आये किय युध असुरन भारी । रावणमारि सियाको लाये भापुर मङ्गलभारी ६ कृष्ण अवतार लियो जब प्रभुजी मारे अमित सुरारी । कष्ट से मातु पिता को छुड़ायो कंससे भा युध भारी ॥ ताहि मारि दिय उग्रसेन को सिंहासन बैठारी । बालचरित यशुदाको दिखाये धनि चरणन बलिहारी ७ जय भगवन्त अनन्त सदा गुणवन्त हरण अघभारी । बौधहोइ जग दर्शन दीन्हा सन्तन के हितकारी ॥ अब कलिमें होइहैं अकलंकी मारिहिं बिमुख बिचारी । जगन्नाथ अपराध क्षमहु मम बन परलोक मुरारी ८ । १ ॥ रामावतार

के भजन ॥ रागपरज ॥ * रघुकुलनन्दन धनुहां धारी ॥ टेक ॥ अवधपुरी में जन्म लीन्ह प्रभु कौशल्या महतारी । बिश्वामित्रके यज्ञ के कारण मारे अमित सुरारी ॥ तब प्रभु जाय जनकपुर माहीं ब्याही जनककुमारी । भरत लक्ष्मण अरु रिपुसूदन हैं भ्राता असुरारी १ भरत मातुकी आज्ञा पाके बन में गये खरारी । रावण हरि तहँ सीतालैगो प्रभु लंका पगधारी ॥ ताको मारि अवध फिरि आये सिय सँग हर्षित भारी । बैठे राजसिंहासन पै प्रभु मख की भूमि सँ-वारी ॥ २ ॥ रजक एक प्रभु निन्दा कीन्हीपुनि श्रीपति धनुधारी । सीताको बनबासपठायो लक्ष्मण संग सिधारी ॥ रहा गर्भ सीतहिं

* प्रभु जगपालन गिरिवरधारी ॥ आनन्दसागर ॥

तेहि अवसर सुनिये सुजन सुखारी। बाल्मीकि आश्रम जिहि बन तहँ तजि फिरे लषण दुखारी ३ इत मुनि सियहिं भवन निजलाये उत गुरु साजि हय भारी। हाटकपत्र रामयश लिखिके बांध्यो तासु लिलारी॥ रखवारी रिपुहन सेना ले तिहुँ दिशि फिरे प्रचारी। नृप सब भे तिनके आधीने पुनि सबगे दिशि चारी ४ इत सीताके द्वै सुत जाये लवकुश योधा भारी। युध बिद्या मुनि तिन्हें सिखाई अरु रामायण सारी॥ खेलत रहे बाजि तहँ दे-खत बांधि रखा मुदभारी। सेना सारी मूर्छित कीन्ही रिपुहन सहित पछारी ५ समाचार सुनि तब रघुकुलमणि पठवा लषण प्रचारी। किय मूर्छित सो भरत तब

आये सोउ किय मूर्च्छित भारी ॥ तब रघु-
पति पुनि आपहि आये सेनालै सँगन्यारी ।
निज सुत लखि प्रभु अन्तरयामी अस
किय चरित बिचारी ६ जानतहूं कछु क्षण
मूर्च्छितभये लेइ मुकुट असुरारी । मातुहि
दिखरायो दोउ बालक शोचित भइ महता-
री ॥ आपन सतिते सकल जियाये राजा
जनक कुमारी । परिचय भयो तबहि सबही
ते किय प्रभु पुत्रन प्यारी ७ सेना संगलेइ
पुनि सियपति गमने अवध मँझारी । लव
कुश बाल्मीकि सँग आये होन लगा मख
भारी ॥ निज सति सिया धरणि में समाई
फिर नहिं अवध सिधारी । कनकमूर्त्ति सिय
की बिरचाके मख कीन्हो अघहारी ८ अन्त-
रधान भये पुनि रघुपति परिजन पुरजन

तारी । सकल लोग सुरलोक सिधाये बैठि बिमान मँझारी ॥ जिनको नाम जपत अघ भागे तिन प्रभु किय मख भारी ॥ आप यज्ञकरि नरहिं सिखावत सब बिधि जन हितकारी ९ शरणागतपालक रिपुघालक भक्तन लगि अवतारी । आयो श्वान शरण में प्रभुकी ताकर दुख दिय टारी ॥ अधम उधारन असुरसँहारन पापपुञ्ज दुखहारी । जगन्नाथ लवकुश रामायण या बिधि गाई सारी १० । १ ॥ मंगल ॥ रागगूजरी ॥ *

जन्म अवध में भयो दशरथजी के लाल को । सुर नर मुनि सब आये देखन जगपाल को १ भरि मुक्तामणि रत्न औ लाल से थालको । कीन्ह कौशल्या

---

* [illegible] जब भयो है बधावा लेचलौं ॥

दान दुखित कंगाल को २ भाग सराहत सकल अवध महिपाल को। जगन्नाथ जिन गेह जन्म असबालको ३। २॥

रागखम्माच ॥ + ऐसो जग बलवान न कोऊ जैसे हैं रघुनायक मेरे॥ टेक॥ सीता ब्याह करन को जनकजू प्रण कीन्हो धनुहाँ जो धरेरे। तोड़िके निज भुजबलते दिखावेसोई श्रीसीताको बरेरे १ आये बड़बड़ भूपसभा में तिनहिं मध्यमें रावण हेरे। सब मिलिजुलिके धनुष उठायो टूटे नहिं बल कीन्ह घनेरे २ कोमल तन पंकज लोचन प्रभु आये तहँ हर्षात मनेरे। देखि झरोखे ते सिया विचारति टूटेधनु मेरा भाग बनेरे ३ धनुष

+ आयो आज जनक की नगरी दशरथराजकुमार अलोरी॥ अनुरागलतिका॥

उठाइके तोड़ेउ रघुपति ब्याह कीन्ह तहँ सीता सेरे । फिरे लजाइ राजा निजनिज घर जगन्नाथ आये हरिडेरे ४ । ३ ॥ रागबिलावल ॥ [1]

सिया रघुबीर चरणहीं मनाऊं । जाते घर बैकुण्ठ में पाऊं ॥ टेक ॥ जटा मुकुट कर धनुष बिराजे । संग में ऋक्ष कपि सेना छाजे ॥ भाइ लक्ष्मण संग बिराजा । श्री हनुमान करें सब काजा ॥ बन्दौं तव चरणं । राजिव नयनं १ हरि लेगयो सिया को रावन । गे लङ्का हरि त्रिभुवन पावन ॥ संग लिये हनुमान को आपन । रावण हति किय भूप बिभीषन ॥ बन्दौं तव चरणं । करुणाअयनं २ कीन्हा राज सिया सँग लाई । भेंटे अवधमें चारो भाई ॥ कीन्ह सकल

---

[1] गुरु गणेश चरणहीं मनाऊं । बिमलज्ञान भक्ति जेहि पाऊं ॥

देवता तहँदर्शन। सियासंगलखिभयेमुदित मन ॥ बन्दौं तुम चरणं । जन सुखदयनं ३ मातु कौशल्या आरतिलावें । भाइभरतजी चमर डुलावें॥ कीन्हो जगन्नाथ यशगाना। मोपर करहु कृपा भगवाना॥ आशा है तुम चरणं । मोहि दिनरयनं ४ । ४॥ रागकाफ़ी ॥ +

जयरघुनायक जनसुखदायक करुणासिन्धु धरे धनुशायक॥ टेक ॥ कमलनयन शिर मुकुट बिराजे कानन कुण्डल छवि अधिकाई। बीड़ा पान धरे मुखमाहीं। दशन चमक मोतिन की नाईं १ उर बैजन्ती माल बिराजे कर धनुहाँ की छबि है न्यारी । कटिकिंकिणि पीताम्बर सोहै

+ जानकिनाथ सहाय करें जो कौन बिगार करे नर तेरा ॥ आनन्दसागर ॥

पगु नूपुरकी धुनि झँझकारी २ बाम भाग में सियाबिराजें पवनकुमार करतरखवारी। खड़े लक्ष्मण भरत शत्रुहन छत्र चमर पंखा करधारी ३ पाँवन रेखा नखकी शोभा जो जन ध्यान करतहै बिचारी। जन जग्गनाथ पाप सब बिनशें बसो हृदयमम रूप खरा-री ४। ५ ॥ राग आसावरी ॥ * भज रघुनन्दन सीता रे मन भज रघुनन्दन सीतारे ॥ टेक ॥ शोक मिटावन सब अघदावन हरिको भजन पुनीतारे। अस प्रभु यश चितदे जो गावत लोभ मोहको जीता रे १ जो नहिं भजन राम को होवे बादिहिं जीवन बीतारे। एकहु बार भजे

---

* आज सकारे धेनु दुही मैं वहै दूध मोहिं प्यारे री ॥

[illegible] ॥

हरि जो नित कटे पाप सब मीतारे २ ऐसो कृपालदयाल न कोऊ जैसे प्रभु जग हीतारे । निश्चयकरि जो भजे निशि बासर तेहि अतितरण सुबीतारे ३ अधमउधारन सब दुख टारन भक्तन के जो मीतारे । जन जग्रनाथ प्रसन्न हैं जापर सो क्या भव भय भीतारे ४ । ६ ॥ अथ हनुमान्जीके भजनं ॥ रागविहाग ॥ * भजहु मन मेरो श्रीहनुमान ॥ ध्रु० ॥ फांदि जलधि जिन लंका जारी । लक्ष्मण जी के बचाये प्रान १ धीरज जाइ दियो सीता को । दुष्ट को मारिहैं श्रीभगवान २ रावण मारि सिया लाये प्रभू । पायो बिभीषण अति सन्मान ३ जगन्नाथ हनुमतगुण गायो । ममदुख हरहु सोईबलवान ४ । १ ॥

---

* सखोरी दोउ बालक नाहिं क्तयोग ॥ आनन्दकानन ॥

रागकाफ़ी ॥ * श्रीहनुमान सुनो बिनती । रहु मोहिं सहायक कीशपती ॥ टेक ॥ तुम जारे लंकमें असुरन घर । अकुलाय रहे दैत्यन जरजर ॥ १ ॥ सुतबन्धुभये हतरावण के । रणमें सँग राम औ लक्ष्मण के ॥ २ ॥ जब रावण देखी दशा सगरी । तब महिरा-वणसे बिनती करी ॥ ३ ॥ दुख सकल सुनायो कहिरावण । मोहिं होहु सहायक महिरावण ॥ ४ ॥ सुनि सो धरि वेष बिभी-षण के । आयो दल राम औ लक्ष्मण के ॥ ५ ॥ तेहि लीन्ह उठा दुनो भाइनको । उड़ि चलत भयो महिरावणसो ॥ ६ ॥ तुमहींसो जाइ निकट मारा । शिर फेंकिके

* सुन २ रे मन अनहद सुन । तेरे घटभीतरमें होरही धुन ॥

पावकमें डारा ॥ ७ ॥ दुहूं गोद में राम लषणको लियो । तुम सेनादिश प्रस्थान कियो ॥ ८ ॥ हरिये जग्रनाथ के संकट को । अब हे हनुमत रघुपति चेरो ॥ ६ । २ ॥

अथ कृष्णावतार के भजनें लोलाके ॥ रागरामकली ॥ *

हरिके चरण मेरे मन भाये ॥ टेक ॥ देवकी गृह लीन्ह अवतारा । वेही नन्दकेलाल कहाये १ उनघरघर माखनखाये । यशुदा गृह उरहन आये २ उन कुंज में चरित बनाये । देवता सब देखन आये ३ उन टेको गोबर्द्धन नखपर । उनसर्पसे नंदछो- ड़ाये ४ धनि धनि जिन दर्शन पाये । धनि जग्रनाथ यशगाये ५ । १ ॥ रागदादरा ॥ †

---

* हरि होगये अन्तरधाना ॥ आनन्दसागर ॥

† मुरलिया [illegible] ॥ आनन्दसागर ॥

यशोदा ऐसो चतुर यदुराय ॥ टेक ॥ कौन यतन माखन रखूं का मैं करूं उपाय। ऐसो मोहन है तेरो घरघर रहत लुकाय ॥ संग ग्वाल के बाल ले धाम हमारे आय। ऊखल चढ़ि दधि खात है औरहु देत लुटाय १ कोइ जो कहै तुम क्या करो मेरे धामहिं आइ। मैं जाना घर आपनो तब अस कहत कन्हाइ ॥ धरन जो चाहौं भजत तब दधि आंखन में नाय। कहति मातु अब जाहि जब तब लैहो धरिधाय २ एक दिवस हरि को धरयो ग्वालिन जबहिं रिसाय। ताके पति के हाथ को पकड़ायो यदुराय ॥ उरहन को यशुमति निकट ग्वालिन पहुँची धाय। निजपति लखि लज्जितभई फिरीभजन मुसकाय ३ धनि देवकि बसुदेव हैं जिन

सुत भे यदुराय । धनि गोपी अरु ग्वाल हैं धनि यशुमति नँदराय ॥ को महिमा गावनसके ब्रजबनिता समुदाय । त्रिभुवन पति जिन सँगरमें कह जग्गनाथ सहाय ॥ यशोदा ऐसो चतुर यदुराय ४ । २ ॥ रागमलार ॥

* यशुदा सुनिलेहु अर्ज हमारि गोपिन सब बिनतीकरें ॥ टेक ॥ प्रातसमय हमजल लावन को चलीं यमुन जल ओर । उतसे आये राउर बालक कीन्ह बहुत झकझोर ॥ फोरिके गागर इंडुरी बहाई खींचेउ अंगको डोर । देखनमें तो छोट अधिकहैं पर हैं रस के चोर १ जब मैं बांधेउँ मनमोहन को ऊखल में लेइजोर । तुमहीं आय कहति रहि खो-

---

* ऊधोतुरतहि मधुपुर जाहु कन्हैयाको लेआवहुरेकी ॥ आनन्दसागर ॥

लन अब क्यों कीन्हों शोर ॥ लज्जित फिरीं सखी सब तबहीं आये नन्दकिशोर। कहा मातु ये नैन सैनदैं उलटा उरहन लावैं जोर २ रिस करि तब बोली नँदरानी वे बड़ि जोबन जोर। अब कि बार जे उरहन लैहैं ते पठवों मुखतोर ॥ जगन्नाथ त्रिभुवनपति जाकी बेद न जानैं ओर। भक्ति बिबश सो ब्रजनारिन सँग बिलसत नवलकिशोर ३। ३ ॥ रागजाजवन्ती ॥ * यशुदा री सुनु रीति मोहनकी ॥ टेक ॥ जात यमुनतट लावत अटपट। बरजति सुनत न बात सुनन की १ मेरो ढोटा अभी बड़ छोटा। बानपरी तुम को उरहन की २ तुम सांची तुम्हरो सुत सांचो। हमहीं नजानति

* आली [illegible] कैसा सलोना ॥ आनन्दसागर ॥

रीति कहन की ३ जगन्नाथ प्रभु भक्ति बिबश असि। लीला करत रिझावन मन की ४।४॥ रागरामकली॥ † हमतें देखो श्याम लुकाये॥ टेक॥ सुनु हरि सुनु हरि सुनु हरि। तुम्हरे बिनु कछु न सोहाये १ चलु सखि चलु सखि चलु सखि। चलु सखि लावें मनाये २ कुंजमें कुंजमें कुंजमें। जाइके रहे हैं छिपाये ३ जब ढूंढ़त ढूंढ़त पाये। तब गोपिन अङ्गलगाये ४ हमहूं हरि आश लगाये। कह जन जग्गनाथसहाये ५।५॥ संगीत राग भैरो॥ * जयजय यदुबीर बीर कंसको पछारो॥ टेक॥ ककककक कंस नृपतिययययययज्ञकरत। नननननन्दलाल

---

† हरि होगये अन्तरधाना॥ आनन्दसागर॥

* ताण्डव गति मुण्डनपर [illegible] ॥ आनन्दसागर॥

यज्ञकोउजारो १ कुकुकुकुकुवलयापीड़ चच चच चाणूरादि । मममम मल्ल प्रबलसबको हरि मारो २ दददद दैत्य मारि मममम मखउजारि । कककक कंसमारि सबकोदुख टारो ३ हहहह हरि मोहिं देहु । निनिनिनि निज चरणनेहु ॥ जजजज जगन्नाथ तुम पद मन वारो ४ । ६ ॥ रागनट ॥ * जबसे सुनो ऐसो बैना ये ऊधो रैनि दिवस नहिं चैना ॥ टेक ॥ श्याम कह्यो है योग करनको हमसे योग बनैना । संगमें उनके जन्मसे रहि आई सोइ चिन्ता दिन रैना १ हरि कारण हम व्याकुलजिततित फिरहिं दिवस अरु रैना । पहिलेसे काहे को प्रीति लगाई

---

* कैसी लेआयेहो पाती ये ऊधो कैसी ले आये हौ पाती ॥ आनन्दसागर ॥

नीर बहे दोउ नैना २ इन्द्रको कोप भयो जब ब्रज पर तब राखो बल ऐना। सो अब छोह न राखो हमारो कुब्जाकरे सँग शैना ३ ऐसो जो जानति हम उनको छल तो जाने देति तबैना। जन जग्गनाथ जो पावहिं पर हम उड़ि जाहिं जहँ सुख दैना॥ ४। ७॥ रागदेश॥ † सो संग तजि भाजि गये ह औररी॥ टेक॥ जबते मोहन त्यागि गये हैं। क्षण जिमि घ औररी १ बछरू गौ जलपान न करहीं। निरखत ख औररी २ ऊधो जो तुम प्रभु को न लावो। यमुनामें म औररी ३ जगन्नाथ आवहु नट नागर। आशा हैं ध औररी ४। ८॥*

---

† आज हरि कहां गये नेहड़ा लगाय॥ आनन्दसागर॥

* माइ कृष्ण दधागय खाइरा॥ आनन्दसागर॥

सखि ऐसे छली यदुराईरी ॥ टेक ॥ हम ते कहेउ हरि आयब फिरिके। दिवस अमित बिसराईरी। कह राधा अबलौं नहिं आये भे ऐसे निठुर कन्हाईरी १ मारा कंस जाय मथुरा में पायो राज सुहा-ईरी। लोभि रहे वाहि राजपाट में गोपिन इत बिलखाईरी २ दीन्हो ऊधो को तहँते पठाई योग कथा सिखलाईरी। ललिता कहे कुब्जा की है करनी। राखे श्याम लुभाईरी ३ भइ ब्याकुल अति मातु यशोदा पठई मुरलि मिठाईरी। ऊधो जाय बहुरि मथुरा में कहि गति सबन सुनाईरी ४ भे सोचित सुनिके अति माधो राधाकी सुधि आईरी। जन जग्गनाथ मिले गोपिनते तनधरि द्वारका बसाईरी ५ ॥ १९ ॥

अथ बिनय ॥

रागसोहनी ॥*धनि हरिठाकुर मोहनप्यारे ॥ टेक ॥ लिय अवतार भक्तहित तुम प्रभु दुष्टन मारिके सन्त उबारे १ लिय बसुदेव गेह अवतारा । कंसहिं मारि सकल दुख टारे २ भक्ति बिबश यशुदा गृहमाहीं । ऊखलमें बँधिगये एकबारे ३ जगन्नाथ तुम पद चितलायो । नाथ रहहु तुम मोहिं रखवारे ४ । १ ॥ रागगट ॥ † धनि हरिकर्ता सकल संसार ॥ टेक ॥ जाको सुमिरें सकल देवतागण । इन्द्र बरुण मुखचार १ सुमिरे से जाके अधम दुष्टगण । भवसागर उतरें पार २ होत न मुदित जो हरिचर्चा

---

* जाइके यशुदासे कहूंगी ॥ अनुरागलतिका ॥

† [illegible] ॥ [illegible] ॥

सुनि । ताको कहूं न उबार ३ जनजग्रनाथ कहे करजोरी । प्रभुगति अगम अपार ४ । २ ॥ रागपरज ॥ † भजयदुनन्दन आरतभंजन यदुनन्दन भजरे मतिमन्दा ॥ टेक ॥ अवगुण सागर यह भवसागर नितकर सुमिरण गिरिधरनागर । माया लोभ बिबश जग मरना । कैसे ह्वै भवसागर तरना १ कलियुग में यक हरिको भजन है । और सकल झूठा परिजन है ॥ हरि यश हरिगुण जो जहँ गावें । सकल देव तीरथ तहँ आवें २ आगम निगम सबै यह गावें । बिनु हरि भक्ति के को गति पावें ॥ ऐसो समुझि भजले भगवाना ॥ जाते ह्वै सुरपुर को जाना ३ तुम प्रभु ज्ञान दयाके सागर ।

† भजगोविन्दं भजगोविन्दं गोविन्दंभज मूढमते ॥ मोहमुद्गर ॥

विनति करत सुनिये नटनागर॥ जनजग्र-
नाथ शरणमें तुम्हारी। यमपुर देहु छोड़ाइ
मुरारी ४। ३॥ रागदेश॥ कलिमल हरना
श्याम सुमिरना गहो कृष्ण की शरना॥
टेक॥ जो कछु मिले भोग तुम लावो मन
से करो सुमिरना। ह्वै सन्तुष्ट स्वामि जब
तुम्हरो। तब क्या यमसे डरना १ नहिं
सन्तुष्ट है काहुसे श्रीपति धन दौलत सब
स्वपना। एक प्रीति वह सांची चाहें प्रिय
जाने तब अपना २ करें देवता सब पछि-
तावा प्रिय है नरतन धरना। एकरैन दिन
करिके तपस्या। मिले दरश हरिचरना ३
सकल काम जंजाल छाँड़िके चहिय प्रेम
हरिचरना। जगन्नाथ कह येहीबानी अन्त
समय है मरना ४। ४॥ रागदेश॥ मनमो

हनये । पुरवोमेरि आस ॥ टेक ॥ गिरिवर-धारि बिहारी ये । भक्तिहो मेरी प्रकास १ दीनदयाल मुरारीये । दीजे दृढ़ बिश्वास २ हरिभक्तन पद प्रेमलगे । ना ह्वै यमते त्रास ३ जगन्नाथ हरि गाइ कहे । मैं तो तुम्हारो दास ४ । ५ ॥ राग टोड़ी ॥ † भक्तपर कृपाल और दीनपर दयाल हैं । ताहिते तो श्यामनाम गाये भक्तपालहैं ॥ टेक ॥ ग्राह से छोड़ायके गजराज को उधारेहैं । कनककशिपु को मारिकै प्रह्लाद को उबारो है १ द्रौपदी को चीर नाथ धाइकै बढ़ायो है । नखपर गिरिराखि ब्रजके लोग को बचायो है २ किंकरोंसे एकनाथजगन्नाथ दास है ।

---

† दीनानाथ दीनबन्धु याहिते कहाये हैं । द्रौपदीको लाज राखि द्वारका ते धाये हैं ॥

रहु सहाय शरणजानि चरणकंज आस है ३१६ ॥ रागकल्यान ॥ † राधावर कमल चरण भजमन अशरण शरण कृपासिंधु दीनबंधु सन्तन हितकारी ॥ टेक ॥ कमलनयन तिलक भाल शीश मुकुट उर बिशाल । किंकिणि कटि पीत बसन हाथ मुरलि धारी १ राधाजू सङ्ग सङ्ग लाजत छबि लखि अनङ्ग । ललिता चन्द्रावलादि गोप की कुमारी २ कुंजन श्यामारु श्याम बिचरत सँग गोपबाम । देखत छबि मन सिहाति देवन की नारी ३ ऐसी छबि ब्रजबिलास होवै मम हृदय बास । गावै जग्रनाथ दाससुनिये गिरिधारी ४ । ७ ॥

---

† कौशल्या विलोकि बदन बारिद सुषमा के सदन मुदित पय पान हेत सुसुकि सुसुकि रोवै ॥ आनन्दसागर ॥

अथ होली प्रारम्भः॥

रागकाफ़ी॥ * सिया राम राज सुनि अवध मचो है अनंद॥ ध्रुव॥ ब्रह्मा विष्णु महेश सब आये। औ गन्धर्व अधिक यश गाये। बाजत ताल मृदंग १ नारद आदि सकल मुनिबृन्दा। मिले राम जी से सब सुखकन्दा। बर्णे यश बहुरंग २ बाढ़ेउ सुख सम्पति पुरबासी। किय दर्शन सिय राम अबिनासी। बाढ़ी हर्ष उमंग ३ मातु कौशिल्या आरति लावे। तासु चरण जग्रनाथ मनावे। देहु भक्ति सतसंग ४। १॥

† सांवरो ब्रज धूम मचाई॥ टेक॥ घर घर से निकसीं ब्रज बनिता जल भरने

---

* प्रण येही मेरो इक रामसे खेलूं मैं होरी॥ आनन्दसागर॥

† ब्रजमें हरि होरी मचाई॥

को जाई। कंकर फेंकि गगरि हरि मारे।
कह गोपिन मुसकाई। देहिं ऊखल बँध-
वाई १ सुनत बचन रिसकरि मनमोहन
इंडुरी दीन्हि बहाई। छीनि झपटि गागरि
नागरि की। दीन्हीं फोर गिराई। जाहु
मोहिं लेहु बँधाई २ जाइकहा सुनिले नँद
रानी ऐसे ढीठ कन्हाई। जल भरने यमुना
नहिं पावें। गागरदेत गिराई। इंडुरी देत
बहाई ३ तुम ग्वालिन योबन मद माती
झूठी कहति बनाई। बाँधत हरि छुड़वन
हित धाई। अब नहिं कहत लजाई।
कहतिहैं यशोदा माई ४ हे नँदनन्दन हे
मनमोहन लीला अधिक बनाई। जन
जग्गनाथ रची यह होरी। गोपिन हारि

सिधाई। जीते गये कुंवर कन्हाई ५। २॥

श्याम खेलत राधा से होरी ॥ टेक ॥ इत
हरिग्वाल सखासँग निकसे उत राधा सँग
गोरी। बांधेदल दुहुँदिशि भयेठाढ़े। इत
दल ग्वाल खड़ोरी। उतै सब गोप
किशोरी १ केसर रंग हाथ पिचकारी लीन्हे
अबिरन झोरी। पोरत अङ्ग परस्पर
हिलिमिलि। एक एक तनपोरी। तहां
भाजिजात बहोरी २ भरि भरि मूठ
गुलाल चलावत हूहू शब्द करोरी।
बाजत ताल मृदङ्ग तमूरा। गावत सब
मिलि होरी। लसत तनु रङ्ग भरोरी ३
धनि धनि ब्रज धनिधनि ब्रजग्वालन
धनि धनि ब्रजकी गोरी। धनि जग्रनाथ
मगन हरि रङ्ग में। धन्य किशोर किशोरी।
सदा जीवें दोउ जोरी ४। ३॥ मेरोमन

हरलीन्ह कन्हाई ॥ टेक ॥ जिन मथुरा में जन्म लियो है गोकुल में रहे जाई । कंस पूतना तहां पठाई । दूध पिलावन आई । हती क्षणमें यदुराई १ श्रीधर बिप्र बहुरि ब्रज आयो पण्डित रूप बनाई । जीहा दीन्हीं मरोरि मुरलिधर । रोवत मथुरा जाई । कंसको खबरि जनाई २ मारि अघासुर आदिक मोहन कुंज में लीला बनाई । राधा ललितादिक गोपियन सँग । रास रच्यो सुखदाई । चरित सब बरणि न जाई ३ मथुरामें जाइ कंसको मारेउ लिये पितु मातु छुड़ाई । कुंडिनपुरमें रुक्मिणि ब्याही । शोभा बरणि न जाई । द्वारिका नगरी बसाई ४ रहत सदा ब्रजमें यदुनंदन

लीला करत सदाई । जन जग्रनाथ धन्य

नँदयशुदा । लीला जिनहिं दिखाई । धन्य गोपी समुदाई ५ । ४ ॥ † निबहो नेह राधिका बरसे ॥ टेक ॥ दीनदयाल भक्त आरतहर । नेह रहे राधा यदुबरसे १ युगल चरण पङ्कज निशि बासर । भक्ति अभय मांगों गिरिधर से २ जन जग्गनाथ यही चाहत है रहे न बिलग मन नंदकुँवर से ३ । ५ ॥ रागपीलू ॥ * भजहु मुरारी बनवारी गिरिधारीरे ॥ टेक ॥ मनमोहन भजु मधुसूदन भजु । भजिलेहु कुंजबिहारी रे १ गोबर्द्धनधर भक्तारतहर । भजु वृषभानदुलारीरे २ मुरलीधर प्रभु लीला-कारी । भक्तनके दुखहारीरे ३ नन्दनँदन

---

† निबहो नेह जानकी बरसे ॥ आनन्दसागर ॥

* भरि पिचकारी से मुरारी रंग डारीरे ॥ आनन्दसागर ॥

हरि नटवरनागर। कृष्ण जगत सुखकारी रे ४ गोपीनाथ यशोदानन्दन। श्रीपति गर्वप्रहारी रे ५ जन जग्गनाथ भजे मोहन छबि। दीनानाथ बिचारी रे ६।६॥ रागदेश ॥ † शरण राखु श्रीकृष्णचन्द्र मोहिं मैं राखहुँ तुम आस॥ टेक॥ शोभे पिताम्बर हाथ में मुरली। ब्रजमें करत विलास १ गोकुल माहिं पूतना मारी। गोपिन सङ्ग किय रास २ कंसमारि मेटो दुख सबको। किय द्वारकामें बास ३ या जग्गनाथ के नाथ तुम्हींहौ। हम दासनके दास ४।७॥ बिनु भगवान कैसे खेलें होरी रामा लगत कुंजनवां उदास॥ टेक॥ जबते गोपाल

---

† राजा जनकजी की परमसुन्दरी नित शिवपूजन आत॥ आनन्दसागर॥

छाये मधुपुर रामा। परी हैं बिरह के फांस १ कहिगये हमसे कपट छलकरि रामा। फिरि आयब तुमपास २ आये गोपाल गोपिन दुख देखि रामा। गोपियन कीन्ह बिलास ३ जन जग्रनाथ रची यह होरी रामा। हमरी पुरावहु आस ४। ८॥

† यमुना किनारे न जाव सखीरी भावत नाहिं डगर है॥ ध्रु०॥ अबतक रहे हरि मथुरा में अब। जैहें द्वारिका खबर है १ निकट रही सखि मथुरानगरी। दूर द्वारिका नगर है २ कैसे रहब सखी बिन नँदलाला। असि यमुनाकी लहर है ३ को अब गोवर्द्धन ते बचावे। सहस नयन को डर है ४ जगन्नाथ एकदास

† लोगकहैं [illegible] मेरे मोहन मेरे घर हैं॥

तुम्हारो । तुम्हरी कृपापै नजर है ५ । ६ ॥

राग परज ॥ * कैसे नन्द नन्द बृषभान नन्दनी राजत हैं दोउ जोरी ॥ टेक ॥ माघ बसन्त जबै ब्रजबीत्यो होली को दिन पहुँचोरी । नवलकिशोर चले होरीखेलन । बरसानेकी ओरी १ नवलश्याम इत से रँगपोरें उतसे नवलकिशोरी । नवल सखा सब सङ्ग बिराजें । नवल सकल उत गोरी २ लीन्ह पकरि हरिको बरजोरी नारिको रूप कियोरी । नयननमें काजर भरि दीन्हो । लीन्हि पिछोरी छोरी ३ मातु यशोदा गोपिन न्योती फगुवा में हरि को चहोरी । जननी सुनि आनन्दित भइ

---

* ऐसी होरी खेल जामें हुरमत लाज रहोरी ॥ आनन्द-

सागर ॥

आति। जन जग्गनाथ कहोरी ४। १०॥

अथ चैत॥

† सङ्गमें श्रीहनुमान मोरे रामाहो॥ लङ्काचले राम लछिमन ॥ ध्रु० ॥ जाइके तीर समुद्रपै पहुँचे। रावण उर भइ त्रास १ कपिसेना लीन्हे सँगसाथे। दैत्यन कीन्ह बिनास २ मारे कुम्भकर्ण अरु रावण। पालो बिभीषण दास ३ जगन्नाथ प्रभु सीतालाइके। कीन्ह अयोध्यामें बास ४। १॥ आयो चैतको मास मोरे रामाहो मोहन मथुरा में छाये॥ टेक॥ भूलिगये गोपियन की प्रीती। कुब्जासे नेह लगाय १ चैताकी अति राति सोहावनि। बिनु हरि

† मिलने को सुदामा आये श्रीकृष्णजी के यार॥ आनन्द-सागर॥

कैसे सोहाय २ कीन्हि प्रीति तब बारी उमरि में । अब क्यों दई बिसराय ३ जात समय हरि मथुराके मग । कहिगये हम से बुझाय ४ सब गोपी रहु कुशल क्षेम से । भेंटकरब फिरि आय ५ ऊधो जाइ श्यामको लावो । कह जग्गनाथ सहाय ६ । २ ॥ * सुनु यशुदारी हमरो बचनवां होरामा ॥ टेक ॥ मथतीरही मैं दधिया अपने अँगनवां होरामा । धाम मोरारी आयो मोहनवां होरामा १ छोटोसो बालक रामा तुम्हरो ढोटनवां होरामा । माखन खाईरी धरेऊ योबनवां होरामा २ इहां होत छोटा रूप देखेमें सोहनवां होरामा ।

---

* [illegible] रामा काहेकी डोरिया हो रामा ॥ आनन्द- सागर ॥

देखि सखियांरी बनत जवनवां होरामा ३ कहती यशोदा माई सुनुरी बचनवां होरामा । कान्हां मोरारी निपट अनजनवां होरामा ४ खेलत हरि कह माता सुनहूं कहनवां होरामा । झूठो ग्वालिन है देती उरहनवां होरामा ५ जन जग्रनाथ गावे चैता मगनवां होरामा । फिरीं सखियां रे अपने भवनवां होरामा ६ । ३ ॥

अथ बारहमासा ॥

राग काफ़ी ॥ ‡ बार २ सखि बिनति करति हैं काहे श्याम तजी ब्रजनारी ॥ टेक ॥ चैतमास सखि फूलत बेली अरु बैशाख में ब्याह कुँवारी । जेठमास बर

---

‡ तकती रही मधुपुरकी डगरमें । [illegible] ॥

पूजा होवति है भावति नहिं बिनु कुंज बिहारी १ असाढ़ मासमें नीर परत अति सावन पवन चले सनकारी । भादवँ में सखि चमके बिजुलिया कांपत अङ्ग बिना बनवारी २ आश्विनमें सखिहोत दशहरा कातिक दीपककी छबि न्यारी । अगहन में कैसे सोहे भवनवां मधुपुरसे नहिं आये मुरारी ३ पूसमास अति परत तुषारा माघ बसन्त अधिक दुखकारी । फागुन फाग लाग अति फीको जन जग्गनाथ बिना गिरिधारी ४ । १ ॥ रागभरथरी ॥ † माधो न आये वृन्दाबनमें भइँ बिकल ब्रजबाल॥ टेक ॥ असाढ़मास घन गरजत हो सावन

† ऊधोजी कन्हैया कहां छांड़ेउ ॥ राधा विकल बिहाल ॥ आनन्दसागर ॥

भरि गये ताल। भादौं निशि अँधियारी है नहिं आये नन्दलाल १ आश्विन खबरि न लीन्ही हो कातिक भइँ न निहाल। अगहन आनशृंगारसे भा अधिकउर साल २ पूस सेज लागे सिहरी हो माघ अधिक बिहाल। फागुन नैन जो फरकत ऐहैं मोहनलाल ३ चैतहिं मदन सतावत हो सोइ बैशाखको हाल। जन जग्गनाथ मुदित भई जेठ भेंटे गोपाल ४। २॥ रागगौरी॥

*प्रथम ऋतु जो बसन्त आई चैत अरु बैशाखरी। बड़ि आश मनमोहन मिले पूजी नहीं अभिलाखरी १ द्वितिय ऋतु ग्रीषम जो आई जेठ और असाढ़री। बढ़ति

---

*जप नाम शिव दिलदेके मन जाते परमपद पावई॥ इसी में है॥

लव हरि दरशकी जिमि गरज घन की बादरी २ तृतिय ऋतु वर्षा जो आई सावन भादौं मासरी । जलधार बहति सरित ते जिमि तिमि नैन नीर उदासरी ३ चौथी शरद ऋतु अबसखी आश्विन औ कातिक आइरी । उन सांवरो ब्रजराज बिनु कैसे रहो ब्रज जाइरी ४ अब पांचवीं हेमन्त ऋतु अगहन औ पूसहिं लागरी । नहिं आये गोपीनाथ ब्रज में बिकल हम ब्रजनागरी ५ छठवीं शिशिरऋतु माघ फागुन अब सखी ब्रजलागरी । जगन्नाथ के नाथबिनु भावे बसन्त न फागरी ६ । ३ ॥

रागमलार ॥ † अरी कौन मधुपुर जावेरी सो राधापायो दुख भारी ॥ टेक ॥ असाढ़मास

---

† अरी कोइ कागज बांचोरी ॥ आनन्दसागर ॥

बादल घुमड़ाय। घुमड़ि २ बरसे झर-
लाय॥ घनगरजे लरजे अति गात। बिनु
घनश्याम रहो कैसे जात॥नयन ढरबारी १
सावन मन भावन नहिं धाम। घर घर
झूला लगावें बाम॥ झूलें हिंडोला गावें
गीत। लागत हम को सबै अनरीत॥
बिना कंसारी २ भादौं मास रयन अँधि-
यारि। झमकि २ अति बरसत बारि॥
हम धानी भीजति ठाढ़ी पौर। कब ऐहैं
हरि मिलिहैं दौर॥ भरोसो मुरारी ३
आश्विनमास अधिक उरआस। जाय
कोइ मनमोहन पास॥ बिप्र जेंवाइ दिये
बहुदान। कब ऐहैं हमरे भगवान॥
सबहिं सुखकारी ४ कातिक आयो फूले
काँस। अबलौं न पूजी हमारी आस॥

बारत दीप सकल संसार। हमको लागे उदास बजार॥ न भावे दिवारी ५ अगहन चीर पहिरि सबअङ्ग। सोवति अपने पिया के सङ्ग॥ भावे हमें कैसे बिनुहरि रैन। कुब्जा करे मोहन सँग चैन॥ भई हरिप्यारी ६ पूसमास अति परत तुषार। अबहूं न आये नन्दकुमार॥ लोभिरहे कुब्जा सँग सेज। राखे श्याम लगाइ करेज॥ करी हुशियारी ७ माघमास सखि होत बसन्त। हमको न भावे बिना भग-वन्त॥ मेटी नहीं गोपियन की पीर। मेटे कहा फिर तो जाति अहीर॥ निठुर बनवारी ८ फागुन जरती बिरहकी आग। कुब्जा खेले हरीसँग फाग॥ जेहिलागि श्याम तजी ब्रजनारि। धनि चेरी तेरी

बलिहारि॥ तू मोहे बिहारी ९ चैत न भावे जो फूलेफूल। मधुपुर रहि हमको गये भूल॥ ऊधोजाय कहो सबहाल। तुम्हरे बिरह व्याकुल ब्रजबाल॥ सखिन क्यों बिसारी १० बैशाखमास छावे घर सब कोय। हमको न भावे बिना हरिसोय॥ बाढ़ो अधिक बिरहको तेज। काहे श्याम हमें दियोतेज॥ मिलहु दुखहारी ११ जेठहि ऊधो सुनायउजाय। तुरतहिं कूच कियो यादवराय॥ मेटी सकल गोपियनकी पीर। जन जग्गनाथ धरो अब धीर॥ मिले गिरिधारी १२। ४॥

अथ तिल्लाना ॥

रागमलार ॥ † श्याम मोही सकल ब्रज-नारी ॥ टेक ॥ बेष बनाइ लियो गोपीको ॥ चलतचाल जैसेहोयछबीली । जाय यमु-नतट ठाढ़भये ॥ करत शब्द घुंघुरूको । झनकृत झनकृत झननननन १ जानि ग्वालिकोइहैस्त्री। ले आई आपनधाम बिहँ-सिके। चरण पखारि दीख रस रसिके॥गये लिवाय कुंजबन माहीं।कीन्हों तहँ बिलास आनन्दित॥ अचरज मान्यो ग्वालि श्याम लखि। गावे जगन्नाथ यशहार्षित ॥ भागि जात पातक सब सुनिके। भनकृत भनकृत भननननन २।१॥ अथ कजरी ॥

रागकजरी ॥ बरजो बरजोरी यशोदारानी

† बनमें आली बाजै बंशी ॥ आनन्दसागर ॥

आपन मोहना । भला बरजो न माने कान्हा काहू बचना ॥ टेक ॥ जातीरही मैं यमुना जलभरना ॥ भला कँगना को शब्द सुनि के धायो मोहना १ केतनो मैं करूँ रानी कान्हाको मना । भला बारबार तबहूं आवे निरखे जोबना २ सुनिलो बचन मोर गोपी मानो कहना। मोरे कान्हा को कबहूं न ऐसो लछना ३ ताही समय आये हरि आपन अँगना। माता झूठो है ग्वालिन तुमको देती उरहना ४ सुनिकै भई लज्जित सो गोपीतखना । भला कजरी बनाई जग्गनाथ मगना ५ । १ ॥

अथ गीतगोविन्द ॥

दो॰।जो यागीतगोविन्दको भोगखोजमनलाय।
आदिकोइकइकवर्णलेनामामिलेतिहिआय॥

गीतगोबिन्द राग कान्हरा ॥

दाससुखद हरि शंखसँहारन।जय जय मीन रूप किय धारन १ सन्तनहित मधु कैटभ मारन। भे कच्छप जय २ भय हारन २ जय कनकाक्षको मारि गिरावन। प्रकटे शूकर रूप भयावन ३ गरजि कशिपु के उदर विदारन। भे नरसिंह रूप दुख टारन ४ नर तनु धरि पावन मनभावन। बलिहिं छलेउ धनि २ हरि बावन ५ नाश करन क्षत्रिन के कारन। भे हरि परशुराम सुख कारन ६ थल लंकामें मारेउ रावन।जय हरि रामरूप मनभावन ७ सकलारत पितु मातु निवारन। कृष्ण अवतार लियो जनतारन ८ हाथ जोरि बिनवत

जिहि सुरजन। बौधरूप सन्तन दिय दर्शन ९ यहि विधि अकलंकी तनुधारन। करिहैं प्रभु असुरनसंहारन १०।१॥

रागजैतश्री॥ †सब घटबासी अन्तरयामी श्रीरघुपति रघुराई॥ टेक॥ मीन रूप ह्वै वेद निकाले। कच्छ टेकु गिरिजाई॥ होइ बाराह उठाई धरणी। जल में बहुरि बसाई १ नरहरि ह्वै प्रह्लाद उबार्‍यो। बामन छलो बलिराई॥ परशुराम ह्वै क्षत्रिन मारे। त्रिभुवन के सुखदाई २ राम होइ के रावण मारेउ। कृष्ण कंस दुखदाई॥ बौध होइ जग दर्शन दीन्हा। दीनानाथ कन्हाई ३ कलिके अन्त अकलंकी होइहैं।

---

† गोविन्दे गोपाल गदाधर गोबिंद की यह बानी॥ आनन्दसागर॥

हतिहैं खल समुदाई ॥ जगन्नाथ हम प्रभु चरणन को । बन्दत हैं शिरनाई ४ । २ ॥

अथ ठुमरी ॥

रागखम्माच ॥ ‡ श्याम के ढूंढ़न कारण ग्वालिन रमति फिरैं सगरो बनबन॥टेक॥ गोकुल नन्दगांवमें ढूंढ़ें । श्री बृन्दाबनकुंज सघन १ जाइ यमुन लखि रेख पांव की । हर्षित भईं सबही मनमन २ आईं तहँ राधा जू सन्मुख । लागीं पूँछन हरिको गमन ३ अतिव्याकुल गोपिन को देखी । आय मिले सबसे मोहन ४ जन जग्रनाथ दया हरि कीजे । मोहिं आश तुम दिवस

‡ हाँ जिसपै फ़िदा गुलहाय चमन देखो श्याम[illegible] कामिनियां [illegible]दिलकश ॥

रयन ५ । १ भजत रैनादिन तुम्हरे चरण। प्रभु करहु कृपामोहिं जानि शरण ॥ टेक ॥ तुम्हरो अन्त सन्त नहिं जानें । शेष सुरेश महेश गणान १ आदि अन्त तुम्हरे कछु नाहीं । रूप धर्यो महिभार टरन २ जगन्नाथ प्रभु जन हितकारी । करहु कृपा दीजै दर्शन ३ । २ ॥ रागकाफ़ी ॥ * पूरण ब्रह्म दया सदना । भज राम औ श्याम दनुजदमना ॥ टेक ॥ जो तीनों लोकके मालिक हैं । सो प्रभु बन माहिं करें गमना १ जाको दर्शन दुर्लभ देवन को । सो गोपियन सङ्गकरें रमना २ जग्रनाथ कहे प्रभु दरशाबिना । कैसे होय तोष

---

* मोको भूलगई बट पनघटको ॥ चहुँओर फिरूं भटकी भटको ॥ नग़मयेदिलकश ॥

सुनु दुःखशमना ३।३॥ रागपीलू॥ बसिगो सँवला मोरे जिय आज॥ ध्रुव॥ शीश मुकुट कर सोहेमुरलिया। जो सब देवनको सिरताज १ जिन गोबर्द्धन नखपर टेक्यो। इन्द्रको भइहै उर अति लाज २ जन जग्र-नाथ शरण में तुम्हारी। हमरो तुमहीं सँवारहु काज ३।४ हरिके चरण मन लावहु ऐ मन हरिके चरण मन लावहु॥ टेक॥ या संसार के मोह लोभ तजु। थोड़े दिनको है धन १ जब पहुँचेगो काल तुम्हारो। कोई नहीं संगीतन २ पड़िहिं मार जब यम के करसे। कोउ न जाय बचावन ३ जगन्नाथ अब या कलियुगमें। सबसे उत्तम हरिको भजन ४।५॥

अथ खेमटा ॥

लागि गयोरी सखि मोरा।सांवला पर ध्यान ॥ टेक ॥ नहिं मोहिंभावे हाथ कंग-नवां।नहिं भावे यमुना स्नान १ नहिं मोहिं भावे सोरहो शिंगरवा । तजिगये मधुपुर कृपानिधान २ मधुपुर में कुब्जासे लोभा-ये। हम कैसे शोभें बिना भगवान ३ जन जग्रनाथ कहति श्रीराधा। कब ऐहें हमरे धन प्रान ४। १ यकरोज आवे द-गेबजवा। धरि ले जाय हाथ ॥ टेक ॥ हाथ लिये लोहे की लुहांगी । मारधार करि लेजाय साथ १ एक उपाय बचन को सीधा। मनसे भजो सुमिरो रघुनाथ २ रैन दिवस करो भजन औ सुमिरण। अन्त

समय जावे यहि साथ ३ यमपुर मोको

देहु छुड़ाई । तुमहीं हौ हरि जग्रनाथ के नाथ ४ । २ धनि बृन्दाबन धनि गोपी ॥ टेक ॥ एकसमय यमुनाके किनारे । गोपियन गोरस बेचेचली १ दधि बेचत हरि पहँ आइ बोलीं । यमुना पार करिदेहु हरी २ नाव चढ़ाइ खेवन हरि लागे । डग मग डग मग देतकरी ३ डरति २ कोउ हरि पहँ आवे । कोउ गले लपटाति रही ४ कोउ हँसि कहे सुनहु नट नागर । खेवे न जानहु नाव अभी ५ धनि २ लीला अनूप बिहारी । जन जग्रनाथ न जातिकही ६ । ३ ॥

× हरिनाम अग्निसे पापतूल जरिजाये ॥ टेक ॥ कलियुग में नहिं आन उपाई । नामै से नर तरिजाये १ संगतिसे सज्जन

× मोर कांचानिंबुवा छुये सो जियासे जायरे ॥

सन्तन्की। जगसुख और न भाये २ छाँड़ि सकल संशय जगमाहीं जो हरिपद मन लाये ३ प्रियजानें ताको यदुनंदन। कह जग्गनाथसहाये ४। ४॥ अथ टप्पा॥ रागनट॥*

देखो मोहन अतिबलवान कालीनाथ लि-ये॥ टेक॥ एक समय हरिगे यमुनातट। ग्वालन साथ लिये १ खेलत गेंद गिरी यमुनामें। जलमहँ कूदिगये २ चहुँदिशि बिकल फिरत ब्रजबासी। ग्वालन त्यागि दिये ३ हाथ जोरि बिनती करे नागिनि। अब कैसे नागजिये ४ जनजग्गनाथ कमल हरि लाये। डरभौ कंस हिये ५। १॥

दोहा॥ एकघड़ी आधीघड़ी। आधहुमें पुनि आध। तुलसी रघुबर भजनते। कटें कोटि

* मानिले यशोदा के लाल मोहन न मानेरे॥ आनन्दसागर॥

अपराध १ यही समुझि मैं गायऊं अपनी मति अनुसार । जगन्नाथ के नाथ प्रभु कीजै ममउद्धार २ जो २ जहँ ते आयके भजन सुनेउ मनलाय । सो २ निज २ धामको बिदाहोहु हर्षाय ३ ॥

अथ श्रीयुत मुन्शीनवलकिशोर साहब लखनवी की प्रशंसा ॥

दोहा ॥ मुन्शीनवलकिशोर यश अब कछु करौं बखान । नाम जासु बिख्यातहै जानत जिन्हैं जहान ॥

चौपाई ॥

परमउदार दयाकेसागर । बुद्धिराशि सब हींगुणआगर ॥ गुणगाहकजगकेहितकारी । बिमलकांति जगमें बिस्तारी ॥ सब भाषा

के ग्रन्थ अनेका। छापैं सुभग एकते एका॥ जिनको ब्ययकरि नर लिखवाये। पढ़त रहेतेसबछपवाये॥ परमशुद्धअतिसुंदरबरणा। सुभगचित्रअतिमङ्गलकरणा॥ अल्प मूल्यमें पढ़ो मँगाई। कसकरदीन्हो सुगम उपाई॥ यातेअधिककौनभलकाजा। भव बारिधिको रच्योजहाजा॥ याते और कौन भलधर्मा। याते और कौन शुभकर्मा॥ सबै अशीशतदेखिभलाई। कहँलगिउनकीकरौं बड़ाई॥ ममग्रन्थन तिन मुद्रित कीन्हे। परउपकार रहत मनदीन्हे॥ उन यन्त्रालयसमजगमाहीं। पुस्तकशुद्धछपतिकहुँ नाहीं॥ सबप्रकार की हैं जहँ पुस्तक। पढ़े मँगाय जासु जो गाहक॥

दोहा ॥

उन्निस सौ बत्तीस † मैं, यह पुस्तक मैं कीन्हि । जगन्नाथ प्रभु कृष्णजब, मोहिं सुमति यह दीन्हि ॥

इति श्रीभजनावलीमुन्शीजगन्नाथसहायविरचितासमाप्ता ॥

---

† संवत् विक्रमाजीनी ॥

श्रीमद्भाग[illegible] भाषाटीकासंयुक्त क़ी० ७)

इस ग्रन्थ के [illegible]ने में कदापि सन्देह नहीं है-इसका भाषा तिलक व्रजबोली में बहुतही प्यारा है आशय प्रत्येक श्लोकों का है क्यों न [illegible] इसके तिलककार महात्मा व्रजवासी अङ्गदजी शास्त्री हैं यह [illegible]लक ऐसा सरल है कि इसके द्वारा अल्पसंस्कृतज्ञ पुरुषों [illegible] पूरा कार्य निकल सक्ता है-संस्कृत पाठक भी इससे श्लोकोंका पूरा आशय समझ सक्ते हैं इसबार यह ग्रन्थ टैपके अक्षरों में उम्दा काग़ज़ सफ़ेद चिकना में छापा गया है और विशेष विद्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध करायागया है जिससे बम्बई की छपी हुई पुस्तक से किसी काम में न्यून [illegible] [illegible]स्कार भी प्रत्येक स्कन्ध में युक्त है [illegible]शा है [illegible]के लेने में महाशय लोग [illegible]